❑अध्यात्म-पद

आतम-संबोध

श्रीमद् जयाचार्य

कवि परिचै

तेरापंथ धरमसंघ रा चौथा आचार्य श्रीमद् जयाचार्य राजस्थानी साहित्य रा ऊजळा नखत हा। लारला दोय सौ बरसां रा सिरै रचनाकारां नैं देखां तौ उणमें जयाचार्य रौ नांव पैली पांत में आवै। आप गद्य अर पद्य, दोनूं विधावां में समरूप सिरजण करयौ। आपरौ सगळौ साहित्य साढी तीन लाख पद्यां रौ है। आज पैली औ देखण में अर सुणण में नीं आवै कै अेक कवि रा इत्ता पद्य है। आपरै श्रीमुख में सुरसती रौ वासौ हो, जिकौ बोलता वा रचना बण जावती। आप आशु कवि हा।

श्रीमद् जयाचार्य रौ जलम जोधपुर संभाग रै रोयट गांव में वि. सं. 1860 री आसोज सुदी चवदस नैं होयौ। आपरा पिता रौ नांव आईदान जी अर माता रौ नांव कल्लू बाई हो। आप ओसवाळां री 'गोलछा' साखा में जलम्या। आपरै जलम रौ नांव जीतमल हो। आपसूं पैलां दोय बेटा कल्लू बाई री कूख सूं जलम्या। 1863 में अचाणचक घर-परिवार माथै आई विपदां सूं होळै-होळै पूरै परिवार में ई वैराग रौ भाव जागण लागग्यौ अर सताजोग जैन मुनि रा मारग-दरसण सूं 1869 वि. सं. में घर रा पांचूं ई सदस्य जैन दीक्षा अंगीकार करली अर साधु बणग्या। बालक जीतमल, जिकौ आगै चालनै श्रीमद् जयाचार्य रै नांव सूं ख्यातनांव होयौ, दीक्षा री बगत फकत नौ बरसां रौ हो। मुनि हेमराजजी आपरा शिक्षा-गुरु हा। आपरै ग्यान री जोत में ठौड़-ठौड़ चौमासौ करतां बारह बरसां तांई श्रीमद् जयाचार्य आगम ग्रंथां रौ गैराई सूं अध्ययन करयौ। अनुशासन, निमता अर खिमता रै पाण आपरै साहित्य री नींव पक्की बणती गई। जलम सूं जिकौ काव्य-कुशळता रौ गुण हो, वौ चावौ होयौ अर दीक्षा रै दोय बरसां पछै फकत 11 बरसां री ऊमर में 'संतगुणमाळा' नांव री पैली रचना लिखी। छोटी ऊमर पण मन नैं काबू कर बांधणौ, निष्ठा अर समरपण भाव जैड़ा गुण आपनैं गुरु हेमराजजी सूं विरासत में मिल्या हा। आपरा ऊंचा आचार-विचार अर बुद्धि री खिमता रै पाण आपरा दीक्षा-गुरु आचार्य ऋषिराय, धरमसंघ रै नेम मुजब आपनैं अग्रणी अवस्था पछै युवाचार्य अवस्था में खुद रा उत्तराधिकारी बणाया। ऋषिरायजी रै सुरगवास पछै वि. सं. 1909 में माघ री पून्यू नैं आप आचार्य री गादी बिराज्या। आचार्य रै रूप में आप तीस बरसां तांई तेरापंथ धरमसंघ री सेवा करी। संघ नैं घणौ मजबूत बणायौ। आपरै सेवाकाळ रौ बगत इण धरमसंघ रौ सुवरणकाळ हो, जिणमें इणरौ च्यारूं खूंटां विगसाव होयौ। आप आपरै धरमसंघ री जूनी अर नूंवी परंपरा रा समन्वयक बण्या। जयाचार्यजी सिरजणधरमी अर साहित्यप्रेमी हा। आपरै बगत में साहित्य री घणी अंवेर राखीजी। आप आपरै धरमसंघ में अनुशासन अर व्यवस्था सुधार रा केई नेम-कायदा बणायनै प्रशासकीय कुशळता रौ परिचै दियौ।

श्रीमद् जयाचार्य राजस्थानी रै मांय अेक नूंवी गीत-विधा री सरूआत करी जिकी 'टहुका' नांव सूं चावी होयी। आप उण बगत तेरापंथ धरमसंघ में साम्यवादी विचारां री नींव राखी जद देस में समाजवाद कठैई नैड़ौ-आगौ ई कोनी हो। जीवण रा 77 बरस पूरा कर वि. सं. 1938 री भादवा बदी बारस रै दिन सिंझ्या री बगत आप परलोकधाम सिधारग्या। आपरौ व्यक्तित्व घणौ प्रभावी हो— खठरा, पण छरहरौ डील, नेन्हा-नेन्हा हाथ-पग, सांवळौ रंग, मोटौ लिलाड़, दीपतौ उणियारौ, हियै रा ऊजळा, दृढ संकल्पी, बुद्धिबळ री खिमता अर समाजवादी चिंतन-साधना रा सजग अर सावचेत पौरैदार हा।

आप राजस्थानी रा वीर रसावतार सूरजमल्ल मीसण री जोड़ रा आशु कवि हा। आपरौ साहित्य विविधरूपा हो। आप राजस्थानी रा सिरमौर सिरजणकार रै रूप में जाणीजै। आप मौलिक सिरजण रै साथै अनुवाद रौ काम ई घणोई करयौ। प्राकृत भासा रा जैन आगमां रौ राजस्थानी उल्थौ करयौ। प्रबंध-काव्य, जीवण-चरित्र, भक्ति-काव्य, संस्मरण, कथाकोश, जोड़, इतिहास इत्याद री राजस्थानी रचनावां लिखी। आप अठारै बरस री ऊमर में प्राकृत रौ सबसूं गूढ-गंभीर अरथ वाळौ आगमग्रंथ 'पन्नवणा' री राजस्थानी पद्य टीका करनै तेरापंथ में राजस्थानी रा संत ग्यानेश्वर बणग्या, जिण भांत कै महाराष्ट्र रा संत ग्यानेश्वर सोळा बरस री ऊमर में 'गीता' री ग्यानेश्वरी टीका लिखी ही। आप उणीज परंपरा नैं आगै बधायनै राजस्थानी रा बेजोड़ संतकवि बणग्या।

पाठ परिचै

राजस्थानी भासा रौ जैन-काव्य विविध अर विसाल है। राजस्थानी साहित्य रा आदिकाळ सूं ई जैन रचनाकारां रौ घणौ योगदान रैयौ। आपरै धरम नैं आधार बणायनै आखौ जैन-काव्य जैनाचार्यां, तीर्थंकरां, बलदेवां, वासुदेवां, जैन मुनियां, सतियां अर धार्मिक शासकां सूं संबंधित कथा-काव्य, चरित-काव्य, उत्सव-काव्य, नीति-उपदेस अर स्तुति-काव्य रै रूप में मिळै। जैन रचनाकार आपरै लेखन री न्यारी सैली में रचनावां रौ सिरजण करयौ। आदिकाळ सूं लेयनै आधुनिक-काळ तांई जैन-सैली रौ अखूट साहित्य भंडार न्यारी-न्यारी विधावां अर काव्य-रूपां में लाधै। आं रूपां में—विवाहलौ, धमाळ, फागु, संधि, धवळ, हींयाळी, सलोक, ढाळ, चौढाळियौ, रसावळा, बारहमासा अर केई संख्यापरक काव्यरूप आं रचनावां में देख्या जाय सकै।

श्रीमद् जायाचार्य सरल, सहज राजस्थानी भासा रा सबदां नैं परोटतां अैड़ी रचनावां लिखी कै जन-साधारण रै हियै ढूक सकै। इण पाठ में आतम-संबोध रै रूप में आपरी रचना रा कीं पद लिरीज्या है, जिणमें जप-तप, आत्म-कल्पना, मन-बुद्धि री थिरता, धीरता, समता भाव, भलाई, शांति, सास्वत सुख अर केई औगुणां में— रीस, निंदा, ईसकौ, कटुसबद आद री बात करतां आत्मचिंतन सूं खुद नैं जाणणौ, आपरी खामियां नैं देखणौ, चोखी सीख मानणी अर धरम री मरजाद में रैवणौ, धरम रौ पाळण करणौ आद आं पदां रै रूप में जीवण रौ सार है।

आतम-संबोध

जीता! जनम सुधार, तप जप कर तन ताइयै।
छिन मांहि तन छार, दिन थोड़ा में देखजै।।1।।
जीता! निज दुख जोय, कुण कुण कष्टज भोगव्या।
अब दिल में अवलोय, ज्यूं सुख लहिये शासता।। 2।।
स्नेह-राग संताप, जीता! निश्चय जाणजै।
समभावे चित्त थाप, आप सुख-दुख बहुला अख्या।। 3।।
स्तुति जस और प्रशंस, हिवड़ै सुण नवि हरखिये।
अवगुण द्वेष न अंस, सुण तूं जय! निज सीखड़ी।। 4।।
क्रोध-अगन उपसंत, खिम्या चित्त धारै खरी।
धीर गंभीर धरंत, कठिन वचन नवि काढियै।। 5।।
जय! सागर सम जाण, महिमागर मुनिवर सही।
अखिल परम्पर आण, अल्प दिवस में अचल सुख।। 6।।

वेरी मान बिखेर, (जय) नरमाई गुण नीपजै।
हिवड़ै पर गुण हेर, निज ओगुण सुण निद मा।। 7।।
जय निज-आदि सुजोय, विविध पणै तूं दुख लह्यो।
अल्प-कठिन अवलोय, थोपै तूं किण कारणै?।। 8।।
जय ! खिम्या वर टोप, वचन-समिति वख्तर प्रष्ट।
अधिक गुणागार ओप, आतम गढ आराधिये।। 9।।
भू सम जय ! गंभीर, निष्पकम्प मन्दर-गिरी।
हेरे निज गुण हीर, ध्यान सुधारस ध्यायनै।।10।।
धर धन्नो चित्त धीर, अल्प काळ आराधिये।
तूं कर धर तप-तीर, सखरी सुण 'जय' सीखड़ी।।11।।
उळझ्यो काळ अनाद, अंतर 'जय' गुण ओळखो।
प्रवर प्रशांत प्रसाद, धर खिम्या वर खांत सूं।।12।।
चतुराई चित्त चिंत, सुध निज कारज साधिये।
मत कर बीजो मिंत, आतम मिंत जय ! अचल कर।।13।।
जय ! अंतिम जगदीस, कुण-कुण तप अप खार किया।
धरम खिम्या जगदीस, अष्ट न तप आदर सकै।।14।।

⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ताइये=दुख देवणौ, सतावणौ। अवलोय=देखणौ। शासता=सास्वत, हरमेस रैवण वाळा। समभावे=सुख अर दुख में अेक समान रैवणौ, सगळां रै वास्तै समता रा भाव। उपसंत=उपजावणौ, उत्पन्न होवणौ। खिम्या=क्षमा करणौ, माफ करणौ। अखिल=पूरौ, आखौ, संपूर्ण। विखेर=बिगाड़णौ, मान मिटावणौ, खंडित करणौ। हेर=तलास, खोज। बख्तर=कवच। आराधिये=ध्यान देवणौ, पूजा-उपासना। ओळखौ=पिछाणौ, जाणौ। अघ=पाप, नीच करम।

सवाल

विकळपाऊ पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी भासा रौ जैन-साहित्य है—
   (अ) अबखौ अर दोरौ (ब) सरल अर सहज
   (स) विविध अर विसाल (द) गैरौ अर गूढ

( )

2. जैन रचनाकार किण सैली में रचनावां करी?
   (अ) जैन-सैली में (ब) डिंगळ-सैली में
   (स) पिंगळ-सैली में (द) लौकिक-सैली में

( )

3. घणकरा जैन कवियां रा विसय रैया है ?
   (अ) वीरता अर सिणगार (ब) बात बणाव अर चमत्कार
   (स) धरम-नीति अर उपदेश (द) तीनां मांय सूं कोई नीं
( )

4. जयाचार्य किण पंथ रा हा ?
   (अ) तेरापंथ (ब) दादू पंथ
   (स) लालदासी पंथ (द) गूदड़ पंथ
( )

5. जयाचार्य दीक्षा री बगत हा—
   (अ) 12 बरसां रा (ब) 9 बरसां रा
   (स) 13 बरसां रा (द) 7 बरसां रा
( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जयाचार्य रौ बाळपणै रौ नांव कांई हो ?
2. जयाचार्य रौ जलम कद अर कठै होयौ ?
3. जयाचार्य रा माता-पिता रौ नांव लिखौ।
4. जयाचार्य रा शिक्षा-गुरु कुण हा ?
5. जयाचार्य री लिखी किणी अेक रचना रौ नांव लिखौ।

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. जयाचार्य किणरी जोड़ रा अर कैड़ा कवि हा ?
2. जयाचार्य में कांई-कांई गुण हा ?
3. आचार्य बणियां पछै जयाचार्य कांई-कांई काम करया ?
4. जयाचार्य रौ बारलौ व्यक्तित्व कैड़ौ हो ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. राजस्थानी साहित्य में जैन साहित्य रा योगदान नैं समझावौ।
2. जयाचार्य रै व्यक्तित्व अर कर्तृत्व रौ वरणन करौ।
3. जयाचार्य रै जीवण सूं कांई सीख मिळै ? समझावौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. जीता ! जनम सुधार, तप जप कर तन ताइये।
   छिन मांहि तन छार, दिन थोड़ा में देखजै।।

2. स्नेह-राग संताप, जीता! निश्चय जाणजै।
   समभावे चित्त थाप, आप सुख-दुख बहुला अख्या।।

3. क्रोध-अगन उपसंत, खिम्या चित्त धारै खरी।
   धीर गंभीर धरंत, कठिन वचन नवि काढिये।।